चौटाला खानदान में जूतमपैजार... यानी विरासत के लिए नूरा कुश्ती

जिस पार्टी को देवीलाल ने संघर्ष से खड़ा किया आज उसी पार्टी को अपनी-अपनी राजनीति के लिए खत्म किया जा रहा है

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

रोहतक: इस वक्त जब हरियाणा सरकार के खिलाफ किसी सशक्त आंदोलन का रास्ता देख रहा है, उस वक्त राज्य के दो बड़े विपक्षी राजनीतिक दल इनैलो और कांग्रेस में अंदरुनी लड़ाई चल रही है। ताऊ देवीलाल ने जिस पार्टी को अपने संघर्ष के बूते खड़ा किया, उस पर पहले उनके बेटे ओमप्रकाश चौटाला ने कब्जा किया तो 31 साल बाद इतिहास खुद को दोहरा रहा है जब चौटाला के बेटों अजय चौटाला और अभय चौटाला में इस विरासत पर कब्जे के लिए जंग चल रही है। इस आग को खुद ओमप्रकाश चौटाला ने भड़काया।

शिक्षक भर्ती घोटाले में जब बाप-बेटे यानी ओमप्रकाश और अजय मुजरिम घोषित किए जाने के बाद सजा काटने जेल चले गए तो छोटे बेटे अभय चौटाला ने पार्टी पर अपना शिकंजा मजबूत करने के लिए कोशिशें शुरू कर दीं। उधर, अजय चौटाला के बेटों दुष्यंत चौटाला और दिग्विजय चौटाला ने दादा की विरासत को संभालने के लिए अपनी कोशिशें शुरू कर दीं। जेल जाने से पहले अजय चौटाला ने हरियाणा की छात्र राजनीति में दखल देने के लिए इनसो संगठन खड़ा किया और अपने बेटे दिग्विजय चौटाला को उसकी कमान दे दी। राजनीति में नए-नए आए दुष्यंत और दिग्विजय ने पुरानी गलतियों से सबक सीखते हुए साफ-सुथरी राजनीति का नारा दिया और धीरे-धीरे अपने आसपास वफादार युवकों की जमात खड़ी कर ली। अभय चौटाला की पैनी नजर इन हालात पर थी और वह लगातार ओमप्रकाश चौटाला तक खबरें पहुंचा रहे थे कि पार्टी पर दुष्यंत कब्जे की कोशिश कर रहा है।

चौटाला बाहर आए तो गुल खिलाया

ओमप्रकाश चौटाला को गांधी जयंती के मौके पर जेल से परोल मिली और 9 अक्टूबर को देवीलाल के जन्मदिन पर गोहाना में पार्टी ने एक रैली रखी। यह मौका पार्टी को फिर से स्थापित करने और चौटाला को नए अवतार के रूप में पेश करने की कोशिश के रूप में होना चाहिए था लेकिन यह रैली विरासत की लड़ाई का अखाड़ा बन गई। चौटाला जब बोलने खड़े हुए तो दुष्यंत और दिग्विजय समर्थकों ने वहां न सिर्फ अभय चौटाला की हूटिंग की बल्कि ओमप्रकाश चौटाला को भी कोई तवज्जो नहीं दी। इस पर चौटाला आगबबूला हो गए और मंच से ही धमकी दे डाली कि चाहे कोई उनका कितना भी सगा

हो, उसे वह पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा देंगे। अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं करेंगे। 11 अक्टूबर को चौटाला ने इनैलो की युवा और छात्र इकाई इनसो को भंग कर दिया और दिग्विजय को बाहर कर दिया। 12 अक्टूबर को इनैलो सांसद और अजय चौटाला के बेटे दुष्यंत को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। उन पर अनुशासनहीनता का आरोप लगाया गया है और एक हफ्ते में जवाब मांगा गया है। इसके अलावा किसान सेल के दायित्व से पूर्व विधायक निशान सिंह को मुक्त करते हुए उनकी जगह पूर्व विधायक कली राम को नियुक्त किया है। कर्मचारी सेल में भी बदलाव करते हुए पूर्व संयोजक धारा सिंह को अब कर्मचारी सेल का प्रभारी नियुक्त किया है और उनके स्थान पर संयोजक का दायित्व बलवीर सिंह को दिया गया है। एक नए सेल का गठन करते हुए मेडिकल सेल का संयोजक डा. के. सी. काजल को बनाया गया है। हिसार और दादरी जिले की पार्टी इकाइयों में भी बदलाव लाते हुए हिसार में राजेंद्र लितानी के स्थान पर सतवीर सिसाय को जिला प्रधान नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार दादरी में नरेश द्वारका के स्थान पर अब विजय पंचगांवा को जिला प्रधान नियुक्त किया गया। इस तरह चुन-चुन कर अजय समर्थकों को हटा दिया गया।

क्या नया विकल्प मिलेगा हरियाणा को

अजय चौटाला खेमे को जैसे ही इनसो को भंग किए जाने का पता चला, दिग्विजय ने बयान दिया कि यह संगठन चूंकि अजय चौटाला ने खड़ा किया है, इसलिए इसे भंग नहीं किया जा सकता। इसे इनैलो पार्टी ने नहीं खड़ा किया है। इस बयान से अभय चौटाला खेमा तिलमिला गया। दिग्विजय ने इसके बाद जेल में जाकर पिता को सारे घटनाक्रम से अवगत कराया। यह अभी साफ नहीं है कि अजय ने क्या रणनीति अपनाने की सलाह दी है लेकिन दुष्यंत और दिग्विजय की कोशिश बता रही है कि वह हरियाणा को नया राजनीतिक विकल्प देने पर विचार कर रहे हैं। एक-दो दिन में तस्वीर साफ होने की उम्मीद है।

नई दिल्ली के 17 जनपथ यानी दुष्यंत के आवास पर आने वाली भीड़ से इसका फैसला होने की उम्मीद है। अगर हरियाणा से हजारों की तादाद में युवक या इनैलो के युवा कार्यकर्ता दोनों भाइयों को समर्थन देने पहुंचते हैं तो वे बगावत की घोषणा कर देंगे। दोनों भाई स्थिति को भांपना चाहते हैं।

दोनों ही खेमे अब जमीनी लड़ाई के लिए तत्पर नजर आ रहे हैं। आने वाले वक्त में अगर ओम प्रकाश चौटाला की और रैलियां कराने की कोशिश होती है या अभय चौटाला कार्यकर्ता सम्मेलन के नाम पर भीड़ जुटाते दिखते हैं तो उसी में साफ हो जाएगा कि दोनों गुट कितने पानी में हैं।

चौटाला हैं पैंतरेबाज, पलट भी सकते हैं

जेल जाने की वजह से चौटाला लंबे समय से सक्रिय राजनीति से दूर हैं। उनके ताजा हमलों को पार्टी को फिर से सक्रिय करने की उनकी अपनी रणनीति के रूप में भी देखा जा रहा है। क्योंकि अभी उन्होंने अजय चौटाला को इनैलो का महामंत्री बनाए रखा है। सिर्फ उनके बेटों यानी अपने पोतों पर लगाम कसी है। चौटाला ने जो नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी बनाई है, उसमें अजय को रखा है। इसका अर्थ यह निकाला जा रहा है कि कल को अगर अजय अपने बेटों से माफी मंगवा देते हैं तो पोतों को वापस लेते हुए पूरी पार्टी को एकजुट करने की पहल की जा सकती है। सूत्रों का कहना है कि दीवाली तक स्थिति साफ होगी। क्योंकि दीवाली के आसपास अजय को जेल से परोल पर बाहर आने की अनुमति मिलेगी। अजय के बाहर आने पर अगर उनके बेटे उनके लिए अलग से रैलियां आयोजित करते हैं तो उसका मतलब होगा कि बगावत मुकम्मल हो जाएगी। अजय अपनी नई पार्टी बनाकर या इनसो को ही जिंदा कर दांव खेल सकते हैं। यह भी संभव है कि अजय बाहर आने पर अपने पिता के आगे पूरी तरह सरेंडर कर दें। कुल मिलाकर इनैलो आंतरिक विवादों से उबर पाएगी, इसकी संभावना अभी कम ही नजर आ रही है।

अभय से चौटाला की उम्मीदें

अभय चौटाला ने पिछले दिनों बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती से चुनावी गठबंधन किया। हरियाणा में बसपा का कोई खास सियासी वजूद नहीं है लेकिन दलित वोटों को ट्रांसफर कराने के लिए यह गठबंधन कुछ मदद कर सकता है। रक्षाबंधन पर अभय चौटाला मायावती से राखी बंधवाने भी पहुंचे। ओमप्रकाश चौटाला अपने छोटे बेटे की इस सियासी कामयाबी पर मंत्रमुग्ध हैं। उन्हें लगता है कि अभय राजनीतिक रूप से ज्यादा समझदार है। मायावती से गठबंधन अभय को इनैलो में जीवनदान दे रहा है। हालांकि हरियाणा में जाट और दलितों का छत्तीस का आंकड़ा कई जिलों में बना हुआ है इसके बावजूद अभय ने एक परिपक्व सियासी नेता की तरह पहल की है।

कांग्रेस ने भी नहीं सीखा सबक

हरियाणा में एक तरफ राजनीतिक रूप से चौटाला परिवार बिखर रहा है तो दूसरी तरफ कांग्रेस में भी हालात अच्छे नहीं हैं। करारी शिकस्त के बावजूद पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अशोक तंवर के बीच चल रही कटुता कम नहीं हुई है। पिछले दिनों तंवर ने फरीदाबाद समेत तमाम जिलों में संकल्प यात्रा निकाली लेकिन सभी कार्यक्रमों से हुड्डा समर्थक कांग्रेसी गायब रहे। हुड्डा ने भी अपनी संकल्प यात्रा निकाली तो उसमें तंवर समर्थक गायब रहे। इस तरह दोनों गुटों की लड़ाई आला कमान के सामने स्पष्ट है। दोनों गुट के नेता हरियाणा में तमाम मुद्दों पर कोई बड़ा आंदोलन पिछले एक साल में नहीं खड़ा कर सके जबकि पेट्रोल डीजल की कीमतों समेत तमाम ऐसे मुद्दे हैं जिन पर कांग्रेस कई राज्यों में आंदोलन चला रही है लेकिन हरियाणा में कांग्रेस ने एक भी आंदोलन नहीं खड़ा किया। कांग्रेस हुड्डा को लेकर सतर्क रहती है। वजह यह है कि जिस तरह तमाम पार्टियां जाट मतदाताओं पर गिद्ध की नजर गड़ाए हुए हैं, उसमें हुड्डा के अलावा कांग्रेस के पास कोई बड़ा जाट नेता नहीं है। कांग्रेस हुड्डा को खोना नहीं चाहती है।

जन संकल्प यात्रा, जनता को बहकाने का भाजपाई जुमला

फ़रीदाबाद (म.मो.) अपने पूरे कार्यकाल में तो भाजपा की केन्द्रीय व हरियाणा सरकार ने कुछ किया-धरा नहीं अब चुनाव सिर पर आते देख चिंता सताने लगी तो तरह-तरह के लच्छेदार पाखंड शुरू करा दिये। पार्टी हाई कमांड के आदेश पर देश भर के भाजपाई नेता-मंत्री, सांसद, विधायक आदि जनता को भ्रमित करने के लिये सड़कों पर निकल कर तरह-तरह की नौटंकियां करते घूम रहे हैं।

स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर पहले बड़खल विधान सभा क्षेत्र व फ़िर बल्लबगढ़-पृथला विधान सभा क्षेत्र के कुछ गांवों में पदयात्रा पर निकले। साथ में रहे स्थानीय विधायक व पार्टी के अन्य लगुए-भगुए। इस यात्रा को नाम दिया गया संकल्प यात्रा। यानी जनता से संकल्प कराने का प्रयास कि आगामी चुनाव में भी उन्हें ही सत्ता की मलाई खाने दी जाय। इसके लिये वे जनता को अपनी तथाकथित उपलब्धियों को गिना रहे हैं।

वैसे तो गिनाने को इनके पास कुछ है नहीं, फ़िर भी गिनाने के नाम पर उस 'सर्जिकल स्ट्राइक' को गिनाना नहीं भूलते जिसके बावजूद आये दिन (पाकिस्तानी) आतंकवादी भारतीय सैनिकों एवं सुरक्षा बलों को मार रहे हैं। कशमीरियों का अपहरण कर उन्हें मौत के घाट उतार रहे हैं। पूरी दुनिया में भारत का गौरव बढा दिया है कि प्रधानमंत्री मोदी जिस देश में जाते हैं मोदी-मोदी के नारे लगते हैं। वह बात अलग है कि नारेबाज भाड़े पर लाये जाते हैं। मोदी जी ने मेक इन इन्डिया, मुद्रा योजना, जन धन योजना, उज्जवला योजना व आयुष्मान जैसी अनेकों योजनाओं की बाढ़ सी ला दी है। वह बात अलग है कि ये सब हवा-हवाई झुनझुनों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

स्थानीय उपलब्धियों में ये लोग गिनवाते हैं राष्ट्रीय राजमार्ग को चौड़ा व बेहतर बना दिया। इस पर फ़ोड़े गये नारियल गिनाना भी गूजर जी नहीं भूलते। लेकिन वे यह नहीं बताते कि गत 6-7 वर्षों से बनता आ रहा यह राजमार्ग अभी भी अधूरा व अधकचरा है जिसके चलते औस्तन हर रोज़ एक राहगीर इसकी बलि चढ जाता है। गूजर महोदय यह भी नहीं बताते कि इस राजमार्ग के निर्माण पर उनकी सरकार कोई पैसा खर्च नहीं कर रही है। इसके निर्माण व टोल द्वारा लूट का ठेका उस रिलायंस कंपनी को दे रखा है जिसने पिछले चुनावों में भाजपा को अकूत धन मुहैया कराया था। आगामी चुनाव में

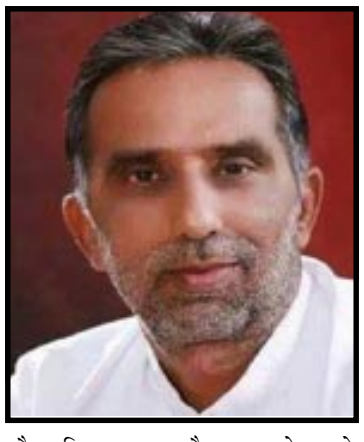

और अधिक धन वह मुहैया करा सके, इसके लिये उसे इसी राजमार्ग पर गदपुरी के स्थान पर एक ओर टोल लगाने का परमिट दे दिया है। इसके अलावा रैफ़ेल डील में जो हज़ारों करोड़ का इनाम उसी रिलायंस को दिया वह अलग से।

उपलब्धियों में गूजर महोदय मंझावली गांव के निकट उस यमुना पुल को गिनाना कभी नहीं भूलते जिसका सपना उन्होंने 15 अगस्त 2016 को इस वायदे के साथ दिखाया था कि यह दो साल में बनकर चालू हो जायेगा। लेकिन बीते 4 बरस में चालू तो क्या उसकी नींव तक भी पूरी नहीं भरी गयी। करीब चार माह पूर्व मंत्री महोदय ने पूरे ताम-झाम के साथ इसकी नींव भराने का काम शुरू तो कराया था लेकिन अभी तक आधा-अधूरा ही पड़ा है, जबकि दावा यह किया गया था कि 31 दिसम्बर 2018 तक पुल चालू हो जायेगा। आयुष्मान का ड्रामा तो सुधी पाठक लगातार देख ही रहे हैं।

हां, जो वास्तविक उपलब्धियां कृष्णपाल व उनके परिजनों की हैं, उनका वे कतई ज़िक्र नहीं करते। वे बिल्कुल नहीं बताते कि उनके मामा श्री ने क्या लूट मचाई है। वे बिल्कुल नहीं बताते कि रेत माफ़िया खनन माफ़िया व शराब माफ़ियाओं से मिलकर वे कैसे नोट छापते रहे हैं। अपनी अवैध बसों को तो अब वे पहचानने से भी इन्कार करते हैं। पुलिस के थाने व चौकियों की नीलामी वे किस भाव करते थे, बिल्कुल नहीं बतायेंगे। बेशकीमती भूखंडों पर इन्होंने कैसे अवैध कब्ज़े व निर्माण किये इनके बताये बिना भी जनता सब जानती है।

जो सरकार जनता के लिये कुछ करती है वह बिना प्रचारतंत्र एवं नाटकबाज़ी के भी जनता को नज़र भी आता है और महसूस भी होता है। जनता को बिना बताये दिख रहा है कि सरकारी स्कूलों की क्या दुर्दशा हो चली है, परिणाम ज़ीरो-ज़ीरो प्रतिशत तक आ रहे हैं। जनता को खूब दिख रहा है कि सरकारी अस्पतालों की क्या स्थिति है और उन्हें वहां क्या-क्या भुगतना पड़ता है। पैट्रो उत्पादों की कीमतें बढा कर इस सरकार ने कैसे जनता को लूटना शुरू कर रखा है वह जनता खूब अनुभव कर रही है। बिजली, कोयला, कुकिंग गैस के दामों ने किस तरह आम आदमी का बजट बिगाड़ा है वह किसी के बताये बिना ही सब को नज़र आ रहा है।

विकास के नाम पर जिस तरह से सरकारी खजाने को लुटाया जा रहा है वह शहरी व ग्रामीण सड़कों के गड्ढे बखूबी जनता को बता रहे हैं। स्मार्ट सिटी के नाम पर जिस तरह जनता के खून पसीने की कमाई को लूटा जा रहा है वह किसी के बताये बगैर जनता को स्वत: दिखाई दे रहा है। किसानों को उनकी फ़सलों के बढे हुये समर्थन मूल्य का झूठ तो सामने आने में एक पल भी नहीं लगता। एक तरफ़ बढा हुआ समर्थन मूल्य सरकार घोषित कर रही है वहीं दूसरी ओर उसी वक्त किसान की उपज औने-पौने दामों मंडियों में बिक रही हैं तो किसान क्या कहेगा, यही न कि बहुत झूठा है मोदी तो।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06